अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च की हार्दिक बधाईयाँ ।

महिला सशक्तिकरण - वर्तमान संदर्भ में

मौलिक रुप से हमारा समाज एक पुरुष प्रधान समाज रहा है महिलाओं को हमेशा यहां दोयम दर्जे का स्थान प्रदान किया गया है। पहले महिलाओं के पास किसी भी प्रकार की स्वतंत्रता ना होने के कारण उनकी सामाजिक और पारिवारिक स्थिति एक पराश्रित से अधिक और कुछ नहीं थी, जिसे हर कदम पर एक पुरुष के सहारे की जरुरत पड़ती थी। वैसे तो आजादी के बाद से ही महिला उत्थान के उद्देश्य से विभिन्न प्रयास किये जाते रहे है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में महिला सशक्तिकरण की बयार में अत्याधिक तेजी देखी गई है। इन्हीं प्रयासों से परिणामस्वरुप महिलाओं के आत्मविश्वास में कई गुणा बढ़ोतरी हुई है और वे किसी भी चुनौती को स्वीकार करने के लिए खुद को तैयार करने लगी है। जहां सरकारें महिला उत्थान के उद्देश्य से नई नई योजनाएं बनाने लगी है, वहीं कई गैरसरकारी संगठन भी उनके अधिकारों के लिए अपनी आवाज बुलंद करने लगे हैं। नारी सशक्तिकरण के तहत महिलाओं के भीतर ऐसी प्रबल भावना को उजागर करने का प्रयास भी किया जा रहा है कि वह अपने भीतर छिपी ताकत को सही मायने में उजागर कर, बिना किसी सहारे के आने वाली हर चुनौती का सामना कर सकें ।

आज की महिलाएं सिर्फ घर गृहस्थी को संभालने तक ही सीमित नहीं रही है, बल्कि हर क्षेत्र में उन्होंने अपनी उपस्थिति दर्ज करा दी है, व्यावसायिक क्षेत्र हो या पारिवारिक, महिलाओं ने यह साबित कर दिया है कि वे हर काम कर सकती है जो कभी पुरुषों के योग्य समझा जाता था। कुछ समय पहले तक जिन व्यावसायिक क्षेत्रों में केवल पुरुषों का ही वर्चस्व हुआ करता था, अब वहां महिलाओं को काम करते देखकर हमें आश्चर्य नहीं होता है। शिक्षित और आत्मनिर्भर बन जाने के कारण वह अपने ऊपर विश्वास कर, अपने जीवन संबंधी निर्णय लेने लगी है।

लेकिन नारी सशक्तिकरण की पैरवी करते हुए हम इस बात को नकार नहीं सकते कि जब हम किसी एक को सशक्त करने की बात करते हैं तो स्वाभाविक तौर पर हम दूसरे व्यक्ति के अधिकार क्षेत्र को सीमित कर रहे होते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो महिलाओं की स्थिति को सुधारने के लिए जरुरी है कि पुरुष वर्चस्व की महत्ता को कम कर दिया जाए, ऐसे हालातों में भारतीय पुरुष जो महिलाओं का दमन-शोषण करना अपना शौक समझते थे, वह इस बात को सहन नहीं कर पा रहे कि दबी-कुचली महिलाएं अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाने लगें। यही कारण है कि महिला सशक्तिकरण को बहुत अधिक तरजीह दिए जाने के बावजूद पुरुष वर्ग में एक तबका ऐसा भी है जो महिलाओं की आजादी को अपने लिए घातक मानकर चल रहा है। अपने झूठे पुरुषत्व को कायम रखने और महिलाओं को उनसे निम्न होने का अहसास दिलवाने के लिए वह कभी उसके सम्मान के साथ खिलवाड़ करता है तो कभी उस पर हाथ उठाता है।

हम बड़े गर्व के साथ सरकार द्वारा बनाई जा रही योजनाओं को अपना लेते हैं, लेकिन हम यह भूल जाते हैं कि महिलाओं के लिए बनाई गई विभिन्न योजनाएँ उन्हें अधीनस्थ और शोषित होने का भी अहसास दिलवाती हैं, घरेलू हिंसा को रोकने और स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने जैसे कानून हमारे समाज की इस कड़वी हकीकत को बयान करते हैं कि समय परिवर्तन हो जाने के बाद भी पुरुष आज भी स्वयं को महिलाओं को सम्मान देना पंसद नहीं करते । उनकी मानसिकता आज भी पहले जैसी ही है, विवाह के बाद उसे अपनी पत्नी के साथ मारपीट करने का अधिकार प्राप्त हो जाता है। बेटी को शादी के बाद दूसरे घर ही जाना है तोउसे पढ़ा लिखा कर खर्चा क्यों किया जाए लेकिन जब सरकार उन्हें लालच देती है, तो वह उसे पढ़ाने के लिए भी तैयार हो जाते हैं और हम यह समझने लगते है कि परिवारों की मानसिकता बदल रही हैं।

दुर्भाग्यवश नारी सशक्तिकरण केवल शहरी क्षेत्रों तक ही सिमटकर रह गया है। एक ओर बड़े बड़े शहरों और महानगरों में रहने वाली महिलाएं शिक्षित, आर्थिक रुप से स्वतंत्र, विभिन्न क्षेत्रों में ऊंचे पदों पर काम करने वाली और आधुनिक विचारधारा वाली महिलाएं हैं, जो पुरुषों के दमन को किसी भी रुप में सहन नहीं करना चाहती। अपने साथ हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध वह अपने दम पर लड़ना जानती हैं, इनकी संख्या भले ही कम हो लेकिन उन्होंने जो सम्मानजनक स्थिति प्राप्त की है, वह बेहद प्रशंसनीय हैं, वहीं दूसरी तरफ ग्रामीण इलाकों में तो आज भी नारी के अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न ही लगा हुआ है। गाँवों में रहने वाली महिलाएं ना तो अपने अधिकारों को जानती है और ना ही उनके महत्व को समझती है, जिस कारण वह पति के अत्याचारों और सामाजिक लांक्षनों को अपनी नियति मानकर सहन करने को विवश हो जाती है ।

हमारा पुरुष प्रधान समाज जिन संस्कारों, परम्पराओं और मर्यादाओं की दुहाई देकर महिलाओं को अपने द्वारा निर्मित दायरे में बांधकर रखना चाहता है, पुरुष द्वारा उन्हीं सीमाओं का अतिक्रमण और अवमानना कोई नई बात नहीं है, खास बात तो यह है कि उसे ऐसे कृत्य के लिए कोई ठोस सजा नहीं दी जाती, वही अगर कोई महिला इन बंधनों को तोड़कर बाहर निकलना चाहे तो उसे हमारे समाज के ठेकेदारों की कोप दृष्टि का पात्र बनना पड़ता है। हम भले ही खुद को आधुनिक कहने लगे हो, लेकिन वास्तविकता यही है कि आधुनिकता केवल हमारे पहनावे और व्यवहार में आई है लेकिन चरित्र और विचारों से अभी भी हमारा समाज और इसमें रहने वाले लोग पिछड़े हुए ही है। पुरुष वर्ग महिलाओं को आज भी एक वस्तु की भांति अपने अधीन बनाए रखना चाहता हैं, आज महिलाएं गृहणी से लेकर एक सफल व्यवसायी की भूमिका को सहज ढंग से निभा रही हैं। वह स्वयं को पुरुषों से बेहतर साबित करने का एक भी मौका गंवाना नहीं चाहती, अगर वह खुद में छिपी ताकत को पहचान अपना पृथक और स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण करने का प्रयास करती है तो वह पुरुषों से ज्यादा बेहतर निर्णय लेने की भी काबिलियत रखती हैं। आधुनिक युग की महिलाएं पुरुष के समकक्ष ही नहीं, बल्कि कई क्षेत्रों मे तो पुरुष के वर्चस्व को भी चुनौती दे रही हैं। अपने मेहनत और काबिलियत के बल पर उन्होंने अपनी एक अलग पहचान बनाई है । **जिंदगी में काम करो ऐसा, कि पहचान बन जाये, हर कदम ऐसा चलो, कि निशान बन जाये, यहां जिंदगी को सभी काट लेते है पर, जिंदगी जियो ऐसी कि मिसाल बन जाये ।**

– डॉ. कीर्ति जैन, खरगोन

इनर व्हील क्लब, रतलाम द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कृत लेख के संपादित अंश ।

वृद्धाश्रम समाज के लिए शर्म की बात

मुंबई, संजय जैन । आज कई घरों में बुजुर्गों की स्थिति ऐसी हो गई है कि 'जो कमावे वह खावे और दूसरा मांगे तो मार खावे'। ऐसी स्थिति हो जाने के कारण ही देश में वृद्धाश्रम या विधवाश्रम की बाते चलने लगी हैं। ऐसे आश्रम स्थापित हों, यह कोई गौरव की बात नहीं है; अपितु उन बुजुर्गों और विधवाओं के परिवारों के लिए तथा समाज और संस्कृति के लिए शर्म की बात है। आपसे मेरा पहला प्रश्न यह है कि आपका राग आपके माता पिता पर अधिक है या पत्नी-बच्चों पर अधिक है ? भगवान पर राग होने का दावा करने वालों से मेरा यह महत्वपूर्ण प्रश्न है। योग की भूमिका में माता पिता की पूजा लिखी है, पत्नी बच्चों की नहीं । मुझे तो ऐसा महसूस होता है कि आज के लोगों को सबसे कम कीमत की कोई चीज लगती हो तो वह उसके मां बाप हैं ।

मर्यादा का दिवाला निकल रहा है। मर्यादा रहेगी वहां तक धर्म रहेगा । महापुरुष भी किसी की निश्रा में रहते थे, उनकी आज्ञानुसार चलते थे । आज चारों ओर मर्यादा का दिवाला निकलता जा रहा है। कोई किसी की सुनने या मानने को तैयार नहीं। पुत्र माता पिता की बात नहीं मानते और विद्यार्थी शिक्षक का उपहास करते हैं। आज युवकों की क्या दशा है, यह तो आप लोगों को मालूम ही है, युवक अपने बाप के भी बाप बन गए हैं, और प्रोफेसर के भी प्रोफेसर बन गए हैं। दुनिया में पढ़े लिखे गिने जाने वाले अपनी होशियारी का उपयोग भी दुनिया को परेशान करने में और स्वयं का स्वार्थ साधने में कर रहे हैं ।

आत्मा का ज्ञान हुए बिना, जितना अधिक पढ़ा जाए उतना अधिक गंवारपन आता है। आत्म-ज्ञान से, धर्म से जीवन में मर्यादा आती है और मर्यादा होने से घरों का संचालन भी ठीक तरह से होता है। मर्यादा से रहित घरों में हमेशा झगड़े हुए करते हैं । संस्कार विहीन आधुनिक शिक्षा प्रणाली के वशीभूत कई बच्चें अपने अभिभावकों को भूल ही जाते है, उन्हें सिर्फ अपना परिवार (पत्नी व बच्चें) ही प्रिय लगता है। माता पिता की जिम्मेदारी उठाना उनको बोझ लगता है इसका दुष्परिणाम सामने आते जा रहे है, बड़े शहरों में वृद्धाश्रम की दिनो दिन बढ़ोतरी हो रही है । बच्चें प्रतिमाह वृद्धाश्रम की किश्त भरकर अपने महत्वपूर्ण कर्त्तव्य से छुटकारा पाना चाहते है। भारतीय संस्कृति में ऐसी स्थिति को कभी भी स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए । स्थानीय सरकारें भी माता पिता की सेवा से पीछा छुड़ाने वाले बच्चों को दंडित कर रही है। हमें उन परिवारों का सामाजिक बहिष्कार करना चाहिए जो अपने माता पिता को वृद्धाश्रम में रहने को मजबूर करते है तभी इस कुरीति को भारतीय समाज में बढ़ने से रोका जा सकेगा अन्यथा आधुनिकता की इस दौड़ में सबसे बुरे परिणाम हमें वृद्धाश्रम के रुप में देखने को मिलेंगे ।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने है, सम्पादक मण्डल का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है । किसी भी प्रकार का विवाद होने पर न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा ।

स्वामी श्री गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज न्यास के लिए प्रकाशक, मुद्रक बाहुबली जैन द्वारा प्रकाशित प्रतीक्षा ग्राफिक्स 127, देवी अहिल्या मार्ग इन्दौर से मुद्रित एवं ग्राफिक्स ज़ील कम्प्यूटर एंड ग्राफिक्स 356, तिलक नगर श्री गोलालारीय दि. जैन समाज न्यास, 64, न्यू देवास रोड़, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित